गाँव-गाँव में स्वराज्य

विनोबा



अ.भा. सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

लेखक :

विनोबा

प्रकाशक :

अ० वा० सहस्रबुद्धे,
मंत्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ
वर्धा (म० प्र०)

पहली बार : २०,०००
नवंबर, १९५५
मूल्य : दो आना

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

राजघाट, काशी

गाँव-गाँव में स्वराज्य

: १ :

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद गाँव के लोगों की हालत सुधरेगी, ऐसी आशा लोगों ने रखी थी। ऐसी आशा रखने में उनकी कोई गलती नहीं थी। अगर स्वराज्य में जनता की हालत न सुधरती हो, तो उस स्वराज्य की कीमत भी क्या है ? इसलिए गाँव की हालत सुधरेगी, यह आशा रखना ठीक ही था।

आप अपने बादशाह

लेकिन लोग समझे नहीं हैं कि स्वराज्य के बाद हमारी हालत सुधारना हमारे हीं हाथ में है। वे समझे हैं कि जैसे पहले मुसलमानों का या अंग्रेजों का राज्य था, वैसे अब कांग्रेस का राज्य आ गया है। लेकिन मुसलमानों के और अंग्रेजों के राज्य में या और भी किसी राजा के राज्य में आपके वोट किसी-ने माँगे नहीं थे। वे राज्य तो पुराने हो गये। वे राजाओं के राज्य थे, सुलतानों के राज्य थे। लेकिन अभी जो हमारा स्वराज्य है, वह लोगों का राज्य है। यहाँ पर जो राज्य चलाते है, वे लोगों के चुने हुए नौकर हैं। आप सब लोगों को सत्ता

दी गयी है कि अपना राज्य आप जैसा चलाना चाहते हैं, वैसा चलाइये और अपना राज्य चलाने के लिए आपको कौन से नौकर रखने हैं, यह आप ही तय कीजिये। इस तरह आपसे वोट माँगा गया और आपने वोट दिया, तो पाँच साल के लिए आपने नौकर कायम किये। जैसे किसान साल भर के लिए नौकर रखता है और साल के आखिर में अगर उसने अच्छा काम किया, तो उसे फिर से रखता है, और अगर उसने अच्छा काम न किया तो दूसरा नौकर रखता है, उसी तरह आपने पाँच साल के लिए नौकरों को चुना है। उनका काम अच्छा चलता है, ऐसा आपको लगेगा तो आप उनको दुबारा चुनेंगे; नहीं तो दूसरों को चुनेंगे।

इसका मतलब यह है कि यहाँ पर आप जो सब लोग बैठे हैं, वे सबके सब बादशाह हैं, स्वामी हैं। लेकिन आपमें से हर व्यक्ति अलग-अलग स्वामी नहीं है, आप सब मिलकर स्वामी हैं। इस तरह आप स्वामी तो बन गये, लेकिन फिर भी अपने पास सत्ता है, इसका आपको भान नहीं है, क्योंकि एक नाटक-सा हुआ। आपकी राय पूछी गयी और आपने राय दी। मान लीजिये कि किसी घर में चार-पाँच साल के मूरख और बेवकूफ लड़के हैं। अगर उनसे पूछा जायगा कि घर का कारोबार कैसे चलाना चाहिए या उनसे वोट माँगे जायेंगे तो वे क्या वोट देंगे? वे तो यही कहेंगे कि आप यह क्या नाटक कर रहे हैं। आप हमारे माँ-बाप हैं,

आप ही हमारी चिंता कीजिये। वैसे ही लोगों ने कांग्रेस-वालों से कहा कि आप बड़े हैं, आपने हमारी सेवा की है, आप हमारे माँ-बाप हैं। आप ही राज्य चलाइये। उधर तो वे कहते हैं कि हम आपके नौकर होना चाहते हैं और अगर आप हमें नौकरी पर रखेंगे, तो हम नौकरी करना चाहते हैं। लेकिन इधर ये लोग कहते हैं कि आप ही हमारे माँ-बाप हैं, इसलिए आप हमारी चिंता कीजिये।

सत्ता किसीके देने से मिलती नहीं है। सत्ता या अधिकार तो अंदर से प्राप्त होना चाहिए। वैसे हिन्दुस्तान के लोग मूरख नहीं हैं, बल्कि काफी समझदार हैं। अभी जो चुनाव हुआ था, वह भी कितने सुन्दर ढंग से हुआ था। लोगों को लगता था कि यहाँ पर न मालूम क्या-क्या होगा, कितनी लड़ाइयाँ होंगी, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। बाहर के देशवालों को आश्चर्य लगा कि हिन्दुस्तान के लोग अपढ़ हैं, फिर भी यहाँ पर इतने सुन्दर ढंग से चुनाव कैसे हो सका। इसका कारण यह है कि हिंदुस्तान के लोग दस हजार साल के अनुभवी हैं। ये अपढ़ जरूर हैं, लेकिन अनुभवी हैं, इसलिए ज्ञानी हैं। इसीलिए यहाँ के चुनाव बड़े अच्छे ढंग से हुए।

हिंदुस्तान के लोग यद्यपि समझदार हैं, फिर भी वर्षों से उनको गुलामी की आदत पड़ गयी है और वे सोचते हैं कि सरकार माँ-बाप की तरह हमारी चिंता करेगी। इसलिए अब जब कि इन लोगों के हाथ में सत्ता आयी है, तब उनको

यह अनुभव होना चाहिए कि वास्तव में हमारे हाथ में सत्ता आयी है। क्या माता को माता का अधिकार कोई देता है ? माता तो अपने में मातृत्व का अनुभव करती है। क्या शेर को किसीने जंगल का राजा बनाया है ? वह तो खुद अपना अधिकार महसूस करता है। उसी तरह स्वराज्य की शक्ति का लोगों को अंदर से भान होना चाहिए। वह कैसे होगा ? क्या गाँव-गाँव के लोग दिल्ली का राज्य चलायेंगे ? गाँव-गाँव के लोग तो गाँव-गाँव का राज्य चलायेंगे। तो फिर उनको राज्य चलाने का अनुभव हो जायगा।

सेवा की सत्ता

इस जमाने में जो राज्य होता है, वह राज्य नहीं बल्कि प्राज्य होता है। वह लोगों का होता है। पहले के जमाने में जो लोगों को दबाता था, वही राजा होता था। कहा जाता है कि जंगल का राजा शेर होता है। इसके माने यह हैं कि जो जंगल के प्राणियों को खा जाता है, वह राजा होता है। संस्कृत में जानवरों के राजा को या सिंह याने शेर को 'मृगराज' कहते हैं। उस राजा के दर्शन होते ही सारे मृग थर-थर काँपते हैं। इस प्रकार की राज्य-सत्ता अब नहीं चलेगी। अब तो राज्य-सत्ता सेवा की सत्ता होगी। माता को घर में क्या अधिकार होता है ? बच्चे को भूख लगी है तो उसे दूध पिलाना, यह माता का पहला अधिकार

है। बच्चे को सुलाकर फिर सोना, यह नंबर दो का अधिकार है, बच्चा बीमार पड़ा तो रात को जागना, यह नंबर तीन का अधिकार है और घर में खाने की चीजें कम हैं, तो पहले बच्चे को खिलाना और खिलाने के बाद कुछ नहीं बचा तो खुद फाका करना, यह नंबर चार का अधिकार है। आज का हमारा **मातृराज** है न ? तो उसके नमूने हमें गाँव-गाँव में दिखाने होंगे।

गाँव-गाँव में जो बुद्धिमान, संपत्तिमान और समझदार लोग होंगे, वे गाँव के माता-पिता बन जायँ और गाँव की सेवा करके गाँव का राज्य चलायें। जो बुद्धिमान पिता होते हैं, वे अपने लड़कों के लिए यही इच्छा करते हैं कि हमारे लड़के हमसे ज्यादा बुद्धिमान बनें। पिता को तो तब खुशी होती है, जब उसका लड़का उससे आगे बढ़ जाता है, गुरु को तब खुशी होती है, जब उसका शिष्य दुनिया में उसका विस्मरण कराता है। लोग गुरु का नाम भूल जाते हैं और शिष्य को ही याद करते हैं, तो गुरु को खुशी होती है। गुरु को लगता है कि मैंने अपने शिष्य को ज्ञान दिया और फिर भी मेरा नाम दुनिया में कायम रहा, तो मैंने ज्ञान ही क्या दिया ? मेरा नाम मिट जाना चाहिए और शिष्य का नाम चलना चाहिए, तभी मैं सच्चा गुरु हूँ। इसलिए गाँव के जो बुद्धिमान लोग होंगे, वे इस तरह से काम करेंगे कि सब लोग उनसे ज्यादा बुद्धिमान बनें। तो फिर ग्रामराज्य का रामराज्य बनेगा।

अपना गाँव एक राष्ट्र

स्वराज्य के माने हैं, सारे देश का राज्य। जब दूसरे देश की सत्ता अपने देश पर नहीं रहती है, तो स्वराज्य हो जाता है। लेकिन जब हरएक गाँव में स्वराज्य हो जाता है, तो उसको रामराज्य कहा जाता है। गाँव के सब लोग बुद्धिमान बने हैं, किसी पर सत्ता चलाने की जरूरत नहीं पड़ती है, तब उसका नाम है 'रामराज्य'। जब गाँव के झगड़े शहर की अदालत में जाते हैं और शहर के लोग उनका फैसला करते हैं, तो उसका नाम है गुलामी, दास्य या पारतंत्र्य। गाँव के झगड़े गाँव में ही मिटाने का नाम है, स्वातंत्र्य या स्वराज्य। और गाँव में झगड़े ही नहीं होते हैं, इसका नाम है रामराज्य। हमें पहले ग्रामराज्य बनाना होगा और फिर रामराज्य। देश का स्वराज्य तो हो गया है, अब हमें ग्रामराज्य बनाना है। इसीलिए हम गाँव-गाँव जाकर लोगों को समझाते हैं कि तुम्हारे गाँव का भला किसमें है। इस पर तुम खुद सोचो। अपने गाँव को एक राष्ट्र समझो। जैसे आज आप भारतमाता की जय बोलते हैं, उसी तरह अपने गाँव की जय बोलनी चाहिए।

हरएक ग्राम की जय होती है, तो देश की जय होगी। जब अपना हरएक अवयव काम करेगा, तब सारा शरीर काम करेगा। आँख, कान, पाँव, हाथ, दाँत अच्छा काम करेंगे, तो सारा शरीर अच्छा काम करेगा। अगर इनमें से एक भी कम काम करता है, तो देह का काम अच्छा नहीं होगा। आँख

काम नहीं करती है और बाकी सारा शरीर काम करता है, तो उसका नाम है अंधा। कान काम नहीं करते हैं और बाकी सारा शरीर काम करता है, तो उसका नाम है बहरा। उसी तरह सारे गाँव अपना काम अच्छी तरह से चलायेंगे, गाँव-गाँव में स्वराज्य बनेगा, तो अपना स्वराज्य अच्छा बनेगा। हमें हरएक गाँव में राज्य चलाना होगा। एक देश में राज्य के जितने विभाग होते हैं और जितने काम होते हैं, उतने सारे गाँव में होंगे। वहाँ पर आरोग्य-विभाग होता है, तो गाँव में भी आरोग्य-विभाग होना चाहिए, वहाँ पर उद्योग-विभाग, कृषि-विभाग, तालीम-विभाग, न्याय-विभाग होते हैं, तो गाँव में भी उतने सारे विभाग होने चाहिए। वहाँ पर परराष्ट्र के साथ संबंध आता है, तो ग्राम में भी परग्राम के साथ संबंध आयेगा।

गाँव-गाँव में विश्वविद्यालय

ग्राम-ग्राम म विद्यापीठ होना चाहिए। ग्रामे-ग्रामे विश्व-विद्यापीठम्। यह है सच्चा ग्रामराज्य। किसीने हमसे कहा कि प्राथमिक शाला हर गाँव में होनी चाहिए, हाई-स्कूल बड़े गाँव में होने चाहिए, और विसाखापत्तन जैसे शहर में कॉलेज होना चाहिए तो मैंने उनसे कहा कि अगर ईश्वर की ऐसी योजना होती तो गाँव में दस साल की उम्र तक के ही लोग रहते। फिर उसके बाद पंद्रह-बीस साल तक की उम्र के लोग गाँव में रहते और उस उम्र से अधिक उम्रवाले

लोग विसाखापत्तन जैसे शहर में रहते। लेकिन जब जन्म से लेकर मरण तक का सारा व्यवहार गाँव में ही चलता है, तो पूरी विद्या गाँव में क्यों नहीं चलनी चाहिए ? ये लोग ऐसे दरिद्र हैं कि एक-एक प्रांत में एक-एक यूनिवर्सिटी स्थापित करने की योजना करते हैं ; लेकिन मेरी योजना के अनुसार हर गाँव में यूनिवर्सिटी होगी। सोचने की बात है कि क्या गाँव को टुकड़ा रखेंगे ? चार साल तक की शिक्षा याने एक टुकड़ा गाँव में रहेगा। फिर गाँववाले आगे की शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उन्हें गाँव छोड़कर जाना पड़ेगा। इसके कोई मानी नहीं हैं। मेरे ग्राम में मुझे पूरी तालीम मिलनी चाहिए। यह मेरा ग्राम टुकड़ा नहीं है, वह तो पूर्ण है। "पूर्णमदः पूर्णमिदम्"— पूर्ण है वह, पूर्ण है यह। ये लोग कहते हैं कि यह भी टुकड़ा है और वह भी टुकड़ा है और यह सब मिलकर पूंर्ण है। हमारी योजना में इस तरह टुकड़े-टुकड़े मिलकर पूर्ण बनाने की बात नहीं है। हम चाहते हैं कि हर गाँव में राज्य के सब विभागों के साथ एक परिपूर्ण राज्य होना चाहिए।

इस तरह हर छोटे-छोटे गाँव में राज्य होगा, तो हर गाँव में राज्यकार धुरंधरों का समूह होगा। गाँव-गाँव में अनुभवी लोग होंगे। दिल्लीवालों को राज्य चलाने में कभी मुश्किल मालूम हुई, तो वे सोचेंगे कि दो-चार गाँवों में चला जाय और वहाँ के लोग किस प्रकार से राज्य चलाते हैं, यह देखा जाय। क्योंकि राज्यशास्त्र-विद्या-पारंगत लोग गाँव-गाँव में रहते

हैं। इसलिए गाँव-गाँव में विद्यापीठ होना चाहिए। आज तो लोग कहते हैं कि गाँव में राज्यशास्त्र के ज्ञाता कोई नहीं हैं, जिले में भी राज्यशास्त्र के ज्ञाता नहीं हैं। सारे आंध्र प्रदेश में राज्यशास्त्र के ज्ञाता दो-तीन ही होंगे। जब स्वराज्य चलाना चाहते हो, तो राज्यशास्त्र के ज्ञाता इतने कम होने से कैसे काम चलेगा ? इसलिए गाँव-गाँव में ऐसे ज्ञाता होने चाहिए। आज हालत ऐसी है कि पंडित नेहरू ने एक दफा कहा था कि हमें जरा प्रधानमंत्री पद से छुट्टी दीजिये, तो सभी लोग घबड़ा गये और उनसे कहने लगे कि आपके बिना हमारा काम कैसे चलेगा? यह कोई स्वराज्य नहीं है। असली स्वराज्य तो वह है जब पंडित नेहरू मक्त होने की इच्छा प्रकट करते हैं, तो लोग उनसे कहें कि जी हाँ, जरूर मुक्त हो जाइये। आपने आज तक बड़ी सेवा की है, अब आपको मुक्त होने का हक है।

सत्ता का विकेन्द्रीकरण

हमें इस तरह सब करना है। जो राज्य-सत्ता दिल्ली में इकट्ठी हुई है, उसे गाँव-गाँव में बाँटना है। हम तो परमेश्वर के भक्त हैं, इसलिए हम ईश्वर का ही उदाहरण सामने रखें। ईश्वर ने अगर अपनी सारी अकल वैकुंठ में रखी होती और किसी प्राणी को अकल ही नहीं दी होती, तो दुनिया कैसे चलती ? फिर तो जब किसी मनुष्य को अकल की जरूरत पड़ती, तो उसे वैकुंठ में टेलीग्राम भेजकर थोड़ी-सी अकल मँगवानी पड़ती। आज जब आपके मंत्रियों को विमान से

दौड़ना पड़ता है, तो फिर भगवान् को कितना दौड़ना पड़ता ? लेकिन भगवान् ने ऐसी सुंदर योजना की है कि सबको अकल बाँट दी है। मनुष्य को अकल दी है, घोड़े को, गधे, को, साँप को, बिच्छू को, कीड़े को–सबको अकल दी है। किसी एक जगह पर बुद्धि का भंडार नहीं रखा है। इसलिए कहा जाता है कि भगवान् निश्चित होकर क्षीरसागर में निद्रा लेते हैं। क्या हमारे मंत्री इस तरह निद्रा ले सकते हैं ? लेकिन भगवान् इस तरह निद्रा लेते हैं कि पता भी नहीं चलता कि वे वहाँ पर हैं! फिर ये हमारे भाई कहते हैं कि वह है ही नहीं, क्योंकि वह अपनी सत्ता नहीं चलाता है। पर वह इतना क्षमाशील है कि निश्चित होकर सो जाता है, फिर चाहे कोई उसको माने या न माने। असली स्वराज्य तो वह होगा जब दिल्ली के लोग सोते होंगे। दिल्ली में क्षीर-सागर है और वहाँ पर हमारे प्रधानमंत्री सोये हुए हैं, ऐसा होगा तब हम समझेंगे कि सच्चा स्वराज्य आया है। लेकिन आज तो हम सुनते हैं कि हमारे प्रधानमंत्री अठारह घंटे तक जागते हैं। यह भी कोई स्वराज्य है ?

पहले लंदन में सत्ता थी। वहाँ से पार्सल द्वारा अब वह दिल्ली आयी है। यह तो बड़ी कृपा हुई। लेकिन वह पार्सल दिल्ली में ही अटक गया है, उसे अब गाँव-गाँव में पहुँचाना है। हमें लोगों को स्वराज्य की शिक्षा देनी है। तो, यह सारा काम करना होगा। इसका नाम है––**शासन-विभाजन**। शासन का

आज जो केन्द्रीकरण हुआ है, उसके बदले शासन का विभाजन करना होगा और हर गाँव में शासन या सत्ता बाँटनी होगी। फिर जब गाँव के सबके सब लोग राज्य-शास्त्र के ज्ञाता हो जायँगे और गाँव के सब लोग कभी झगड़ा करेंगे ही नहीं, तो उस हालत में शासन-मुक्ति हो जायगी और रामराज्य आयेगा।

यह सब हमें करना है। इसीलिए भूदान-यज्ञ शुरू हुआ है। हम गाँववालों से कहते हैं कि अपने गाँव की हालत सुधारने के लिए तुम लोगों को कमर कसकर तैयार हो जाना चाहिए। तुम्हारे गाँव में भूमिहीन हैं, तो उन्हें जमीन देनी चाहिए। जमीन कहाँ से दोगे ? क्या दूसरे गाँव की जमीन लाओगे ? अपने ही गाँव की जमीन का एक हिस्सा उनको देना चाहिए। फिर गाँव-गाँव में उद्योग खड़े करने चाहिए। आपको निश्चय करना होगा कि हम बाहर का कपड़ा नहीं खरीदेंगे, हम अपने गाँव में कपड़ा बनाकर वही पहनेंगे। मैं मानता हूं कि जो बाहर का कपड़ा पहनते हैं, वे नंगे हैं। अभी मेरे सामने जो लोग बैठे हैं, वे सारे बाहर का कपड़ा पहने हुए हैं, इसलिए यह नंगों की सभा है। अगर इन लोगों को बाहर से कपड़ा नहीं मिलेगा, तो वे फटे हुए कपड़े पहनेंगे, फिर लँगोटी ही पहनेंगे और आखिर में नंगे रहेंगे, क्योंकि उनके पास कपड़ा बनाने की विद्या नहीं है।

यह सब काम सरकारी कानून से नहीं होगा। कुछ लोग हमसे पूछते हैं कि भूदान का काम बाबा को क्यों करना

पड़ता है, सरकार अपनी जमीन क्यों नहीं बाँटती है? सरकार जमीन बाँटेगी, तो **ग्रामराज्य** नहीं होगा, **दिल्लीराज्य** होगा। लंदन-राज्य के बदले अब दिल्ली-राज्य आया है। लेकिन हम चाहते हैं कि दिल्ली-राज्य के बदले गाँव का राज्य आये। जिस तरह हमारी भूख मिटाने के लिए हमको ही खाना पड़ेगा, दूसरा कोई हमारे लिए नहीं खा सकता, उसी तरह हमारे रामराज्य के लिए हमें ही भूदान करना पड़ेगा, दूसरे नहीं कर सकते। फिर आज लोग जैसे दिल्ली में बैठे-बैठे सोचते हैं कि अपने देश में बाहर से कौन-सी चीजें आनी चाहिए और देश की कौन-सी चीजें बाहर जानी चाहिए, उसी तरह गाँव-गाँव के लोग सोचेंगे कि अपने गाँव में कौन-सी चीजें बाहर से आनी चाहिए और गाँव की कौन-सी चीजें बाहर जानी चाहिए। आज तो जिसकी मर्जी में जो आया, उसके अनुसार वह बाहर की चीजें खरीदता जाता है। लेकिन इसके आगे यह नहीं चलेगा। सारे गाँव-वाले मिलकर चर्चा करेंगे और निर्णय करेंगे। अगर किसीको गुड़ की जरूरत हुई, तो गाँववाले सोचेंगे और तय करेंगे कि इस साल गाँव में गुड़ नहीं बन सकता, इसलिए एक साल के लिए बाहर का गुड़ खरीदना होगा। लेकिन गाँव के लोग बाजार में जाकर गुड़ नहीं खरीदेंगे। गाँव की दूकान से खरीदेंगे। इस तरह गाँव के लोग बाहर का गुड़ गाँव की दूकान से एक साल के लिए खरीदेंगे और फिर गाँव

में गन्ना बोकर अगले साल के लिए गुड़ पैदा करेंगे। और गाँव की दूकान में वही गुड़ रखा जायगा और वही गुड़ खरीदा जायगा।

इस तरह सारा गाँव एक हृदय से सोचेगा। गाँव में पाँच सौ लोग रहेंगे तो गाँव में एक हजार हाथ होंगे, एक हजार पाँव होंगे, पाँच सौ दिमाग होंगे, लेकिन दिल एक होगा। गीता में एकादश अध्याय में विश्व-रूप दर्शन की बात ह। विश्व-रूप दर्शन में हजारों हाथ हैं, हजारों पाँव हैं, कान हैं, आँखें हैं लेकिन उसमें आपको यह नहीं मिलेगा कि हृदय हजारों हैं। विश्व-रूप का हृदय एक ही होगा। उसी तरह गाँव का हृदय एक होगा। पाँच सौ दिमाग होंगे। वे चर्चा करके बात तय करेंगे। यह हमारी सर्वोदय की योजना है।

सर्वोदय कौन करेगा ?

अब आप मुझे बताइये कि यह सर्वोदय का काम आप करेंगे या आपकी राजधानीवाले और दिल्लीवाले करेंगे ? यह ठीक है कि आप लोग अपनी योजना करेंगे, तो उसमें राजधानीवाले और दिल्लीवाले आपको कुछ मदद देंगे। लेकिन योजना तो आपको ही अपने गाँव के लिए करनी होगी। अगर गाँव-गाँव में जाकर बाबा की यह बात आप समझा देंगे, तो बुद्धिमान् किसानों को यह बात समझने की अकल है। फिर आपको एक एकड़-दो एकड़ का दान नहीं मिलेगा। फिर

तो एक-एक गाँव के लोग आपके सामने आकर कहेंगे कि हमने अपने गाँव के भूमिहीनों का मसला हल कर दिया है। अपने गाँव क भूमिहीनों को और कम भूमिवालों को हमने पूरी जमीन दे दी है। फिर इस तरह सब लोगों के दस्तखत के दानपत्र वे आपकी भूदान-समिति के आफिस के पास पहुँचा देंगे। अब गाँव की सारी जमीन गाँव की बना दीजिये। आज आपके गाँव में भूमिहीन कोई नहीं रहा है। अब भूमिमालिक कोई नहीं रहना चाहिए। आप इस पर विचार कीजिये। हम जानते हैं कि एकदम से यह काम नहीं हो सकता। इसलिए अब खादी और ग्रामोद्योग का काम शुरू कीजिये।

पाँच लाख गाँवों में रामराज्य

हम जानते हैं कि यह सब करने में कुछ समय लगेगा। लेकिन ज्यादा समय नहीं लगेगा। एक गाँव में एक साल का समय लगा, तो हिंदुस्तान के पाँच लाख गाँवों में कितना समय लगेगा, इस तरह का त्रैराशिक नहीं किया जा सकता। आपके गाँव में आम पकना शुरू होता है, तो सारे हिंदुस्तान के पाँच लाख गाँवों में आम पकने लग जाते हैं। इसलिए आपके गाँव में ग्रामराज्य बनने में जितना समय लगेगा, उतने समय में सारे हिन्दुस्तान के पाँच लाख गाँवों में रामराज्य बनेगा। यह विचार आप गाँव-गाँव जाकर समझा देंगे तो फिर आज

जैसी लाख-दो लाख एकड़ जमीन हासिल करने की दरिद्र कल्पना आप नहीं करेंगे। फिर तो आप कोटि-कोटि की भाषा में बोलेंगे।

तीन सूत्र

आज मैंने आपके सामने सूत्र रूप में विचार रखा है। पहली बात है **केंद्रीय स्वराज्य**। दूसरी बात है **विभाजित स्वराज्य**। और तीसरी बात है **राज्यमुक्ति** अथवा **रामराज्य**। अब उसको रामराज्य कहना है या **अराज्य**, यह हरएक की अपनी-अपनी मर्जी की बात है। ईश्वर नहीं है, यह भी कह सकते हो और ईश्वर क्षीरसागर में सोया हुआ है, यह भी कह सकते हो। लेकिन ईश्वर पसीना-पसीना होकर काम कर रहा है, यह नहीं कह सकते हो। या ईश्वर नहीं है या वह अकर्ता होकर बैठा है, ईश्वर करता है और सब पर अपनी सत्ता चलाता है, यह बात नहीं होनी चाहिए। यह तत्त्वज्ञान, यह ब्रह्म-विद्या हमें अपने देश में लानी है।

परस्परावलम्बन

हम चाहते हैं कि आप सब लोग उत्साह से भाई-भाई बनकर काम में लग जायँ। कुछ लोग पूछते हैं कि विनोबाजी की योजना परस्परावलंबन की योजना नहीं है, स्वावलंबन की योजना है। इतना तो वे कबूल करते हैं कि विनोबा की योजना परावलंबन की नहीं है, परंतु वे कहते हैं कि परस्परावलंबन चाहिए। वैसे हम भी परस्परावलंबन चाहते हैं।

आज बाबा ने दूध पिया, तो क्या बाबा ने खुद गाय का दूध दुहा था ? लोगों ने बाबा के लिए सारा इंतजाम किया था। इस तरह बाबा से जो सेवा बनती है, वह करते जाते हैं और लोग उसके लिए इंतजाम करते हैं। परंतु परस्परावलंबन दो प्रकार का होता है। अंधे और लँगड़े का परस्पराव-लंबन होता है। अंधा देख नहीं सकता है, परंतु चल सकता है और लँगड़ा देख सकता है, परंतु चल नहीं सकता। इस-लिए दोनों परस्परावलंबन या सहयोग करते हैं। लँगड़ा अंध के कंधे पर बैठता है। वह देखने का काम करता है और अंधा चलने का काम करता है। इस तरह क्या आप समाज के कुछ लोगों को अंधा रखना चाहते हैं और कुछ लोगों को लँगड़ा रखना चाहते हैं और फिर दोनों का परस्परावलंबन चाहते हैं ? बाबा भी परस्परावलंबन चाहता है। परंतु वह चाहता है कि दोनों आँखवाले हों, दोनों पाँववाले हों और फिर हाथ में हाथ मिलाकर दोनों साथ-साथ चलें। बाबा **समर्थों का परस्परावलंबन** चाहता है। और ये लोग **व्यंग्ययुक्त** या **अक्षम** लोगों का परस्परावलंबन चाहते हैं।

हम जानत हैं कि सारी की सारी चीजें एक गाँव में नहीं बन सकतीं। एक गाँव को दूसरे के साथ और गाँवों को शहरों के साथ सहयोग करना होता है। लेकिन हम यह नहीं चाहते कि गाँवों में शहरों से चावल कूटकर, आटा पिसवाकर और चीनी बनवाकर लायी जाय। हम चाहते हैं कि ये चीजें गाँव में ही

बनें। लेकिन गाँवों में चश्मा, थर्मामीटर, लाउडस्पीकर जैसी चीजों की जरूरत पड़ी, तो वे चीजें शहर से लायी जायँ। आज यह होता है कि शहरवाले गाँववालों के उद्योग खुद करते हैं। गाँव में कच्चा माल होता है और उसका पक्का माल गाँव में ही बन सकता है। लेकिन आज शहरों में यंत्रों के द्वारा पक्का माल बनाया जाता है। और उधर परदेश का जो माल शहरों में आता है, उसे रोकते नहीं। हम चाहते हैं कि गाँव के उद्योग गाँव में चलें और परदेश से जो माल आता है, उसे रोकने के लिए वह माल शहरों में बनाया जाय। अगर गाँव के उद्योग खत्म होंगे, तो न सिर्फ गाँवों पर संकट आयेगा, बल्कि शहरों पर भी संकट आयेगा। फिर गाँव के बेकार लोगों का शहरों पर हमला होगा और ऊपर से परदेशी माल का हमला तो होता ही रहेगा। इस तरह दोनों हमलों के बीच में शहरवाले पिस जायँगे। इसलिए हमारी योजना में गाँव और शहरों के बीच इस तरह का सहयोग होगा कि गाँव-वाले अपने उद्योग गाँव में चलायेंगे और शहरवाले परदेश से आनेवाली चीजें शहर में बनायेंगे। इस तरह प्रत्येक गाँव पूर्ण होगा और पूर्णों का सहयोग होगा। • • •

कोटीपाम (श्रीकाकुलम्)
आंध्र
९-८-'५५

हिंदुस्तान में वर्षों से खादी का काम चल रहा है। उसे छत्तीस साल हो गये हैं। पहले से आज तक इस काम से हमारा पूरा परिचय है। इस काम में हमारी जिंदगी के कई वर्ष बीते हैं——कातने में, बुनने में, हर प्रयोग में। ये सब काम हम लोगों ने किये हैं। हमारे बच्चों ने किये हैं और हमारे साथियों ने भी किये हैं। हमारी कोशिश यह रही कि गाँवों में पूरी खादी चले और बाहर से कपड़ा न आये। यह प्रयोग प्रत्येक प्रांत में बीसों गाँवों में हुआ। एक हद तक वह चला और बाद में रुक गया, क्योंकि उस काम के लिए जो बुनियाद चाहिए, वह नहीं थी। अगर देश के लोग इस बात के लिए तैयार हो जाते हैं कि जैसे घर-घर में अनाज पैदा करते हैं, वैसे घर-घर में कपड़ा भी तैयार करें, तभी यह बात हो जायगी।

घर-घर में खादी

आप कहते हैं कि इस गाँव में कुछ परिवार ऐसे हैं, जो ख़ादीधारी नहीं हैं, बाकी बहुत सारे खादीधारी हैं। हमें जो आगे का समाज बनाना है, उसमें एक गाँव का एक पूरा परिवार बनेगा। अभी तक यह काम हम नहीं कर सके थे। हर चीज का एक समय होता है। ईश्वर की योजना भी होती है, लेकिन हमारे प्रयत्न में कभी ढील नहीं रही। आज तक सतत प्रयत्न जारी रहा, लेकिन तीन-चार साल पहले से हम सोच रहे हैं कि जैसे गाँव-गाँव में और घर-घर में खेती

होती है, वैसे खादी गाँव-गाँव में और घर-घर में किस तरह हो। खादी-भंडार में मिलनेवाली खादी से हमारा मतलब नहीं। हमारा मतलब है, अपने गाँव में और अपने घर में बनायी जानेवाली खादी से, जो लोगों मं खेती में काम करके बचे हुए समय में बनायी गयी हो। यह सब हो सकता है तब, जब गाँव में स्वराज्य होगा।

सरकार मिलों पर रोक लगाये और लोगों को उत्तेजन दे, तो यह काम हो सकता है। लेकिन, सरकार की पहले हिम्मत नहीं होती थी, क्योंकि वह कहती थी कि लोग इस काम के लिए राजी नहीं हैं, तो यह काम कैसे होगा ! जो लोग इसमें विश्वास नहीं करते हैं और सरकार में काम करते हैं, वे इस तरह की दलील देते थे। लेकिन, अब इतने साल के स्वराज्य के अनुभव के बाद देखा गया कि बेकारी की समस्या बढ़ती ही जा रही है, इसलिए सरकार ने समझा कि खादी को उत्तेजन देना होगा। खुशी की बात है कि सरकार इस ओर कदम उठाने जा रही है। यह बहुत बड़ी चीज है। लोग अपने घर में जैसे रोटी बनाते हैं, वैसे अपने घर में खादी बनायें, उसे अपने जीवन का अंग बनायें। यह केवल सरकार की कोशिश से नहीं हो सकता। हर बच्चे का लालन-पालन ठीक होना चाहिए, ऐसा सरकार चाहती है, तो भी माता-पिता के बिना सरकार वह काम नहीं कर सकती। वैसे ही जीवन में एक चीज दाखिल करना, एक निश्चय करना, एक संकल्प करना, यह लोगों का ही काम है। फिर उस संकल्प में सरकार कुछ मदद कर सकती है। करे

तो अच्छा है, और करती भी है। लेकिन मान लीजिये कि सरकार मदद न भी करे, विरोध करे, तो भी लोग जो संकल्प करते हैं, उसकी पूर्ति जनशक्ति से होती ही है।

हमने पहले से आज तक माना है कि लोक-शक्ति को छोड़कर सरकार की ऐसी कोई स्वतंत्र शक्ति नहीं है। जनता मालिक है, सरकार नौकर है। मालिक से बढ़कर ज्यादा शक्ति नौकर की कैसे होगी? जिन लोगों की यह समझ है कि सरकार की शक्ति बहुत बड़ी है, सरकार ही क्रांतिकारी परिवर्तन कर सकती है, वे लोग मालिक से ज्यादा नौकर को कीमत देते हैं। लेकिन ऐसी चीज नहीं है। आपमें बहुत शक्ति है और वह आपकी आत्मा में पड़ी है।

जनसंख्या का हौवा

समझने की बात है कि हिंदुस्तान की जनसंख्या ज्यादा है, जमीन नाकाफी है, वह बढ़ नहीं सकती है। इसलिए जमीन पर जो काम होगा, उतने से गाँव के लोगों को आश्रय नहीं मिलेगा। दूसरे उद्योग के बिना सहारा नहीं मिलेगा। इस काम में यंत्र-युग कोई मदद नहीं देगा। हाँ, विज्ञान दे सकता है। परंतु विज्ञान एक बात है और यंत्र दूसरी बात है। यंत्र-यग में खेती का काम पहले से बहुत जल्दी हो सकता है, परंतु इस तरह से यंत्र यदि खेती में प्रवेश करेंगे, तो बेकारी की समस्या बढ़ेगी, कम नहीं होगी। इसलिए समझने की जरूरत है कि यंत्र से बेकारी की समस्या हल नहीं होगी।

भगवान् ने हरएक को एक मुँह दिया है, तो साथ-साथ दो हाथ भी दिये हैं, तो भी यह बेकारी की समस्या है। अगर

उसने दो मुँह और एक हाथ दिया होता तो क्या अवस्था होती, यह सोचने लायक बात है। हम हमेशा कहते हैं कि हमारे घर में पाँच मुँह हैं। पर आपके घर में पाँच मुँह हैं, तो दस हाथ भी तो हैं। लेकिन यह बात बड़े-बड़े लोग भी नहीं समझते हैं और कहते हैं कि हिंदुस्तान में जन-संख्या बहुत बढ़ रही है और वह अगर कम नहीं होगी, तो हिंदुस्तान की तरक्की नहीं होगी। इस तरह का विचार पाश्चात्य लोगों ने बहुत फैलाया है। यद्यपि इंग्लैंड में जनसंख्या बहुत है, उससे हिंदुस्तान की जनसंख्या कम है, फिर भी वे लोग समझते हैं कि हिंदुस्तान बहुत दरिद्र देश है और ऐसे दरिद्र देश में जन-संख्या बढ़ना भयानक है। इस तरह हिंदुस्तान की जनसंख्या का एक हौवा बनाया गया है। लोग उसकी चिंता करते हैं, बोलते हैं और चर्चा करते हैं।

अभी हाल की बात है। हमारे साथ हमारी यात्रा में एक अमेरिकन बहन थी। पाँच-सात दिन पहले वह गयी। वह दूसरे देश में किसी कॉलेज की एक प्रोफेसर थी और अमेरिका वापस जा रही थी। हिंदुस्तान में ऐसे लोग आते हैं और आजकल तो फैशन पड़ा है यहाँ आकर भूदान को देखने का। उसने भी पढ़-सुन रखा था। हिंदुस्तान का घोर मसला है जाति-भेद, हिंदुस्तान का घोर मसला है दारिद्र्य, हिंदुस्तान का घोर मसला है, जन-संख्या की वृद्धि। जब बाहर की ऐसी बहनें आती हैं, तो स्वाभाविक ही लड़के-बच्चे उनके इर्द-गिर्द इकट्ठे होते हैं। उसने हमसे सवाल पूछा कि मैं आपके साथ घूम रही हूँ

तो देखती हूँ कि यहाँ बहुत बच्चे हैं। हिंदुस्तान की जन-संख्या इतनी बढ़ती रही तो कैसे होगा ? हमने सोचा कि यह गलतफहमी उसके मन में रह जायगी और न मालूम अमेरिका में जाकर वह क्या सुनायेगी !

हम जिन-जिन गाँवों में जाते हैं, वहाँ की लिखित जानकारी हमारे पास रहती है। तो दस-पाँच गाँवों की जानकारी हमने उसके सामने रखी। देखने में आया कि हर घर में मुश्किल से एक बच्चा है। अब मेरे सामने यह प्रश्न खड़ा रहता है कि इतने कम बच्चे हैं, तो काम कैसे चलेगा ? यह अभ्यास करने की बात है। अक्सर हर घर में एक पुरुष, और सवा औरत और एक बच्चा या सवा बच्चा रहता है। याने कुल मिलाकर घर में साढ़े तीन संख्या रहती है। अक्सर हिंदुस्तान में हर घर में पाँच जन-संख्या रहती है और इस हिस्से में साढ़े तीन है। इसलिए संतानों की तो कोई समस्या ही नहीं है। जहाँ घर में पाँच जन-संख्या है, वहाँ भी संतानों की समस्या नहीं है और जब तक हर मनुष्य के पीछे एक मुँह और दो हाथ हैं, तब तक जन-संख्या का सवाल ही नहीं उठता।

राष्ट्र के नेताओं को फिक्र होती है कि इतनी जन-संख्या बढ़ रही है, बड़ी भयानक हालत है। सेनापति को खुशी होती है, जब उसकी सेना में संख्या ज्यादा रहती है। वह दुखी नहीं होता, जब वह देखता है कि मेरी सेना में बहुत सिपाही हैं, लेकिन ये कमबख्त दुखी होते हैं और कहते हैं कि हमारे देश की जन-संख्या बढ़ रही है। मने बीसों दफा कहा है और आज भी

दुहराता हूँ कि धरती को पाप का भार होता है, धर्म की संतान का नहीं। संतान पाप से भी पैदा होती है और पुण्य से भी पैदा होती है। संतान पाप से भी रोकी जा सकती है और पुण्य से भी रोकी जा सकती है। लेकिन जो काम पाप से किया जाता है, उसका पृथ्वी को भार होता है।

पथ्वी में जो पैदावार होती है, उसके लिए पृथ्वी में पोषण पड़ा है। उसका उसे भार नहीं होता, बशर्ते जो पैदावार होती है, वह पृथ्वी को वापस मिले। मल-मूत्र का ठीक उपयोग होना चाहिए। खाद के रूप में पृथ्वी को वह वापस मिल सकता है। जानवरों की हड्डी वगैरह खेती को अच्छी तरह से मिलनी चाहिए। जंगलों के पत्ते वगैरह ऐसे ही उड़ जाते हैं, उनका भी उपयोग हो सकता है। इस तरह से पृथ्वी को सब चीजें वापस मिल जायँ, तो पृथ्वी माता को मनुष्य-संख्या का भार होनेवाला ही नहीं है, बशर्तें हम सब हाथों से काम करें। जब तक आप अपनी चीजें आप तैयार करने का व्रत नहीं लेते, तब तक कोई भी सरकार आपके लिए कोई भी योजना नहीं कर सकती।

गाँव तभी सुखी होंगे, जब गाँववाले सीता-राम सीता-राम कहेंगे। सीता है खेती और राम है ग्रामोद्योग। खेती मिल-जुलकर सबको करनी चाहिए। खेत सबका होगा। संतान माता की सेवक हो सकती है, मालिक नहीं हो सकती। हम भू-माता की संतान हैं, मालिक नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि मालिक अकेला नहीं हो सकता, लेकिन सब मिलकर मालिक हो सकते हैं। हम कहते हैं जैसे अकेला लड़का माँ का

मालिक नहीं हो सकता, वैसे ही सब लड़के मिलकर भी माँ के मालिक नहीं हो सकते। इस वास्ते जमीन पर मालकियत भगवान् की है। और सेवा का न सिर्फ अधिकार, बल्कि कर्तव्य हम सबका है।

ये लोग हमको सुनाते हैं कि जमीन के टुकड़े नहीं होने चाहिए। जिनको हम पर्याप्त जमीन दे सकते हैं, उनको जमीन देनी चाहिए और बाकी लोगों को दूसरे धंधे देने चाहिए। हमने कहा है कि ग्रामोद्योग राम है और खेती सीता है। दोनों मिलकर भला होता है। ग्रामोद्योगों की अत्यन्त आवश्यकता है। उनके बिना खेती की पूर्ति नहीं हो सकती। ग्राम-जीवन स्वावलम्बी नहीं हो सकता, ग्राम-राज्य की स्थापना नहीं हो सकती। हम ऐसा बँटवारा नहीं कर सकते कि रामजी रहते हैं अयोध्या में और सीताजी रहें मथुरा में। दोनों साथ रहेंगे। यह नहीं हो सकता कि गाँव में कुछ लोगों को पानी मिले, कुछ लोगों को रोटी मिले और कुछ लोगों को दूध मिले—जिनको पानी मिलता है, उन्हें रोटी नहीं मिलेगी, जिनको रोटी मिलती है, उन्हें पानी नहीं मिलेगा। और ये दोनों जिनको मिलती हैं, उन्हें दूध नहीं मिलेगा। इस तरह तो हो नहीं सकता। हरएक को मिलना चाहिए पानी, हरएक को मिलनी चाहिए रोटी और हरएक को मिलना चाहिए दूध। हम कहना चाहते हैं कि ये तीनों चीजें सबको मिलनी चाहिए। जमीन की काश्त करने का, उसकी सेवा करने का मौका और धर्म-पालन का मौका हरएक को मिलना चाहिए, चाहे उसके हिस्से में पाव एकड़ जमीन आती हो। कितनी

जमीन किसको मिले, यह कोई सवाल नहीं है। हरएक को जमीन मिलती है, तो उसकी सेवा करनी चाहिए।

भूमि-सेवा का अधिकार

अंतिम आदर्श तो यह होना चाहिए कि देश का प्राइम मिनिस्टर तीन या चार घंटा खेती में काम करे और बाकी बचे हुए समय में दूसरा काम करे, जिसका जिम्मा उसने उठाया है। इससे देश का पावित्र्य बढ़ेगा, आरोग्य बढ़ेगा। उच्च-नीचता का भाव मिट जायगा। जमीन को अनेक सेवक मिलेंगे। सबकी बुद्धिमत्ता का लाभ मिलेगा। सबको समान धर्म और संस्कृति का लाभ मिलेगा। यह तो अन्याय होगा कि कुछ लोगों से कहा जाय कि तुम खेती करो और कुछ लोगों से कहा जाय कि तुम दूसरे काम करो। हमने अभ्यास के वास्ते आठ घंटे बुनाई का, आठ घंटे कताई का और आठ घंटे दूसरे भी काम किये हैं। लेकिन आज मुझे कोई आठ घंटा बुनने को मजबूर करे, तो मैं जरूर इनकार करूँगा। मैं कहूँगा कि मैं इसके लिए तैयार नहीं हूँ कि एक कमरे में बन्द होकर, जहाँ हवा नहीं है, हाथ को कुछ खास व्यायाम न मिले और कमर भी टूट जाय। इसके लिए मैं तैयार नहीं हूँ। चार घंटा मुझे आकाश-सेवन का मौका मिलना चाहिए, उत्तम हवा मिलनी चाहिए, सूरज की रोशनी मिलनी चाहिए, जमीन की सेवा करने का मौका मिलना चाहिए। यह मेरा हक है।

मैं यह नहीं मानता कि इससे भूमि की पैदावार घटेगी। घटेगी तो भी मैं तैयार नहीं कि कुछ लोगों को खेती करने को कहा जाय और कुछ लोगों को इससे वंचित रखा जाय। जैसे

भाषण-स्वातंत्र्य का हक माना गया, विचार-स्वातंत्र्य का हक माना गया, वैसे रोटी खाने का हक है। यहाँ तक कि कुछ लोगों न नमक का भी अधिकार मान लिया है। उसी तरह से मनुष्य-मात्र का अधिकार है कि उसे खेती में सुन्दर व्यायाम मिले और भूमि की सेवा करने का मौका मिले। इसमें कोई आर्थिक योजना दखल नहीं दे सकती और ऐसी योजना सोचने को हम तैयार भी नहीं हैं। यह पारमार्थिक अधिकार है। अगर कोई ऐसी योजना पेश करे कि कुछ लोगों को २४ घंटे सोने से और कुछ लोगों को २४ घंटे दूसरे काम में लगने से आर्थिक लाभ होता ह, तो क्या कोई ऐसी योजना मंजूर करेगा ?

मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि लोग यह कहें कि हम स्टेशन पर रात को काम नहीं करेंगे। ट्रेनें दिन में चलनी चाहिए। यह ठीक है कि कोई बीमार है, कहीं आफत है, तो हम रात में काम करेंगे, लेकिन सारा मानवसमाज इस बात के लिए इनकार कर सकता है कि रात में केवल नौकरी के लिए काम करना पड़े। ट्रेनें अगर दिन में चलेंगी, तो आपकी रेलवे की क्या अवस्था होगी ? यही कि जहाँ शाम हुई वहाँ ट्रेनें रुक गयीं ! बड़ी विचित्र बात मैंने आपके सामने रखी। परंतु जो आत्मा की दृष्टि से देखता है, उसका सोचने का ढंग दुनिया से निराला ही होता है। इसलिए हमारा भी एक अर्थशास्त्र है, और वह विशिष्ट प्रकार का है।

इसलिए हमारी ग्राम-रचना में प्रत्येक मनुष्य को खेती करने का अधिकार मिलेगा और बाकी समय में दूसरे काम करने को मिलेंगे। मुझे अगर कोई कहेगा कि तू प्रोफेसर बन, छह घंटा काम कर, तुझे पाँच हजार रुपये तनख्वाह मिलेगी,

परन्तु खेती पर काम करने का मौका नहीं मिलेगा, तो मैं राजी नहीं होऊँगा। मैं कहूँगा, मुझे चार घंटा खेती में काम करना है और बाकी बचे हुए समय में शिक्षक का काम करूँगा। उसके लिए मुझे पैसा नहीं चाहिए। खेती में काम करके जो मिलेगा, उतना ही मैं लूँगा। मुझे आपका वह ढेर पैसा भी नहीं चाहिए और शिक्षक की मजदूरी भी नहीं चाहिए। मेरी यह मान्यता है कि सब लोग अगर खेत में काम किया करेंगे, तो अच्छे प्रोफेसर बनेंगे, अच्छे व्यापारी बनेंगे, अच्छे वकील बनेंगे, सब अच्छे बनेंगे। इस सर्वोदय-दृष्टि से, सर्वोदय के विचार से सारे ग्राम केवल स्वावलम्बी ही नहीं बनेंगे, बल्कि उनका पूरा विकास भी होगा। यानी मानवता का पूरा विकास प्रत्येक गाँव में होगा, फिर भी उनका परस्पर सहयोग होगा। हम पूर्णों का सहयोग चाहते हैं, अपूर्णों का और अक्षम्यों का सहयोग नहीं चाहते। इस वास्ते पूर्ण विकास का मौका ग्रामोद्योग और खेती मिलकर ही हो सकता है।

सबको तालीम

तीसरी बात कहना चाहता हूँ, तालीम की। यह नहीं हो सकेगा कि केवल ब्राह्मण सीखेगा और बाकी सारे उसके ज्ञान पर निर्भर रहेंगे। ज्ञान-भोजन सबको मिलना चाहिए। खेती का काम करने का मौका, बुद्धि और हृदय का विकास करने का मौका। ये तीनों चीजें हर घर में और

हर परिवार में सबको मिलनी चाहिए। यह जब होगा, तब गाँव-गाँव में आनंद होगा। जैसे तुलसीदास ने कहा है— "गाँव-गाँव अस होइ अनन्दा।" लेकिन यह सब तब होगा जब आप उसको अच्छी तरह से समझेंगे और एक होकर संकल्प करेंगे। इस वास्ते एक परिवार बन जाओ। भूमि सबकी बना दो, जितने बच्चे हैं, वे सब गाँव के हैं, अलग-अलग घर के नहीं हैं, ऐसा मानो। और सबकी तालीम की अच्छी योजना बनानी है, ऐसा समझो। हमारी आवश्यकता की चीजें हम ही अपने हाथों से बनायेंगे, बाहर से नहीं लायेंगे, गाँव में ही कच्चे माल का पक्का बनायेंगे।

वस्त्र-स्वावलंबन का संकल्प

ये जो सब आवश्यकता की चीजें हैं, उन सबमें मेरुमणि है, कपड़ा। अन्न की पहली आवश्यकता है और कपड़े की दूसरी, ऐसा दुनिया में बोला जाता है। लेकिन मानव-संस्कृति का विकास इस तरह हुआ है कि कपड़े की आवश्यकता नंबर एक है और खाने के अन्न की नंबर दो है, ऐसा कहने का मौका आता है। चार दिन मैं भूखा रह सकता हूँ, लेकिन आपके सामने मैं आध घंटा नंगा नहीं रह सकता और न बैठ सकता हूँ। इस वास्ते आपके ध्यान में आयेगा कि सांस्कृतिक आवश्यकता कपड़े की है। ठंढ से रक्षा करने के लिए, धूप से बचने के लिए कपड़े की भौतिक आवश्यकता होती तो उसका स्थान द्वितीय होता और अन्न का स्थान

पहला होता। लेकिन यहाँ तक कि लाश को भी कपड़े की आवश्यकता रहती है। मरने के बाद खाने की आवश्यकता की कल्पना क्या आप कर सकते हैं? इस तरह संस्कृति के खयाल से कपड़ा ऊँचे दर्जे में बैठ गया है। उस बारे में जो गाँव पराधीन होगा, वह सपने में भी सुखी नहीं होगा।

इस वास्ते आपको संकल्प करना होगा कि चाहे दुनिया भर में मिलें चलती हों, गाँव में कपड़ा सस्ता आता हो, वह कपड़ा आपको मुफ्त में भी मिले, जो बाहर का कपड़ा लेगा उसे चाहे दो आना इनाम भी मिले, तो भी हम अपने गाँव का अपने हाथों से बना हुआ कपड़ा हीं पहनेंगे। स्वावलंबी बनेंगे, तभी विकास होगा। इस वास्ते हम भगवान् के सामने प्रतिज्ञा करते हैं कि हम इस मामले में पराधीन नहीं रहेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा आप करिये, यह हमारा आपसे निवेदन है।

गाँव-गाँव और घर-घर में स्वराज्य

जहाँ सर्वोदय का काम पचासों गाँवों में होगा, वहाँ भी हम यह बात रखना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव में यह काम चले। वहाँ लक्ष्मी भी बढ़े और गाँव सुखी हों, पर साथ-साथ स्वाधीन भी हों। आज यह बोला जाता है कि हमारा देश स्वतंत्र हुआ है। एक बड़ा भारी बोझ था, जो दूर हो गया है। बड़ी बात हुई है, इसमें सन्देह नहीं। पर इतने से हम आजाद हुए, ऐसा नहीं है। आजादी तो आत्मा की होती है, मानसिक होती है। आज भी हम हर बात में सरकार का

मुँह ताकते रहते हैं। जब पराधीन थे, तब प्रिवी कौंसिल जाते थे, आज दिल्ली जाते हैं। लेकिन स्वराज्य तो तब होगा, जब पहला कोर्ट ग्राम होगा और आखिरी कोर्ट परमेश्वर होगा। गाँव में आप झगड़ा कर सकते हैं और गाँव में झगड़ा मिटा नहीं सकते क्या? हमारा झगड़ा मिटाने के लिए हम ऐसे लोगों के पास क्यों जायँ जो झगड़ालू के नाम से दुनिया में प्रसिद्ध हैं। बेकारी के कारण चोरी होती है। चोर को कोर्ट में सजा दी जाती है, न्याय तौला जाता है। कौन तौलते हैं न्याय? जो इनसे सवाये बेकार हैं। वे कोई उत्पादन का काम नहीं करते हैं। ढेर तनख्वाह लेते हैं, जिनका दुनिया पर बोझ है। वे जेलर, न्यायाधीश, वकील सब बेकार हैं। अगर हम झगड़ा न करें, तो उनको कोई काम ही नहीं रहेगा। हम अपना झगड़ा उनके पास ले जायेंगे, तो बेकारों की संख्या ही बढ़ेगी। हमें वहाँ जाकर न्याय मिलता है, यह भी एक भ्रम है।

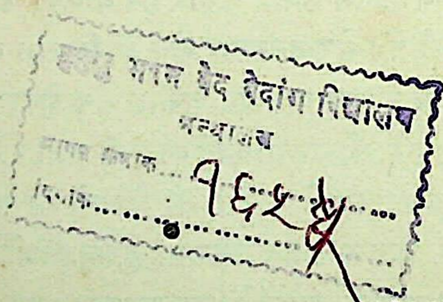
हम गाँव में झगड़ेंगे, पर झगड़ा बाहर नहीं ले जायेंगे, इसका नाम है, ग्रामराज्य। लेकिन गाँव में कोई झगड़ा नहीं होगा, इसका नाम है, राम-राज्य। अपना झगड़ा शहर में ले जाना गुलामी है। अब इतना ही हुआ है कि लंदन के बदले दिल्ली जाना पड़ता है। लेकिन बहुत फर्क नहीं हुआ है। एक प्यासे से अगर कहा जाय कि पाँच मील पर पानी था, वह एक मील पर आया है, बेटा, शान्ति रख। तो प्यासा कहता है, 'इससे मेरा संतोष नहीं होता। पानी अगर पाँच

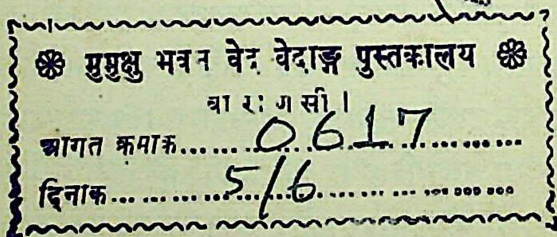
अंगुली पर हो तो भी मुझे संतोष नहीं होगा। मुझे संतोष तो तब होगा, जब पानी कंठ में आयेगा।' तो यह स्वराज्य आया है दिल्ली में, कटक में, शायद रायगढ़ा में भी आ गया हो, लेकिन हम गाँव-गाँव में और घर-घर में स्वराज्य लाना चाहते हैं और वह खादी और ग्रामोद्योग के बिना नहीं हो सकेगा, जमीन के बँटवारे के बिना और ग्रामदान के बिना नहीं होगा, अपने झगड़े अपने गाँव में मिटाये बिना नहीं होगा।

कुजेन्द्री (कोरापुट)

उड़ीसा

२५-६-'५५





मुद्रक--पं० पृथ्वीनाथ भार्गव, भार्गव भूषण प्रेस, बनारस।

विनोबा-साहित्य

गीता प्रवचन	१)
त्रिवेणी	॥)
साहित्यिकों से	॥)
भगवान् के दरबार में	=)
विनोबा-प्रवचन	॥।)
भूदान-यज्ञ (नवजीवन)	१।)
स्वराज्य-शास्त्र (अंग्रेजी)	१)
गाँव-गाँव में स्वराज्य	=)
शिक्षण-विचार (प्रेस में)	

(सस्ता साहित्य मण्डल)

स्थितप्रज्ञ दर्शन
जीवन और शिक्षण
ईशावास्यवृत्ति
विनोबा के विचार (भाग १, २)
विचार-पोथी
गाँव सुखी, हम सुखी

दो आना